Vol. 1; Issue 4; September-December 2023; ISSN No. 2583-6994

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु बुनियादी ढांचे एवं सामर्थ्य की जरूरत (जनपद बागेश्वर के विशेष संदर्भ में)

4

डॉ0 केवल आनन्द कांडपाल
प्रधानाचार्य,
राजकीय इंटरमीडियट कालेज मंडलसेरा
जनपद वागेश्वर
Email: kandpal_kn@rediffmail.com

सारांश

विद्यालयों में पढ़ने–लिखने और संख्या समझ पर लगातार काम करने के बावजूद बहुत सारे बच्चे कक्षा–स्तर के अनुरूप अपेक्षित दक्षताओं/क्षमताओं (बहुत बार अपनी वर्तमान कक्षाओं से नीचे की कक्षा–स्तर के अनुरूप क्षमताओं को भी) को प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं। इस सन्दर्भ में किये गए कतिपय अध्ययनों में यह बात सामने आयी है कि विद्यालय की शुरूआती कक्षाओं में ही नहीं वरन प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा पूरी कर लेने के बाद भी कई बच्चे दिए गए टेक्स्ट को समझकर नहीं पढ़ पाते, उद्देश्यपूर्ण स्वतंत्र लेखन नहीं कर पाते, गणित विषय की बुनियादी संक्रियाएं करने तथा संख्याओं का निरूपण करने में कठिनाई महसूस करते हैं। यह तथ्य अवलोकन अनुभवों से भी सामने आता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वीकार किया गया है कि वर्तमान समय में हमारे देश में 'अधिगम का संकट' है। 'इस नीति की नई व्यवस्था 5+3+3+4 के तहत 3–8 वर्ष की उम्र को फाउंडेशनल स्टेज कहा गया है।... फाउंडेशनल स्टेज की अवधि जीवनभर सीखने और विकास की बुनियाद रखती है और यह व्यस्क जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है।'[1] इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सीखने के लिए तत्काल और आवश्यक शर्त के रूप में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) पर जोर दिया गया है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 5 जुलाई 2021 को एक राष्ट्रीय मिशन 'समझ के साथ पढने और संख्या ज्ञान में प्रवीणता के लिए राष्ट्रीय पहल' (National Initiative for Proficiency in reading with Understanding & Numeracy) शुरू किया गया है। इसे संक्षेप में निपुण (NIPUN) भारत मिशन कहा गया है। इस मिशन का मुख्य लक्ष्य वर्ष

2026–27 तक देश के सभी बच्चों द्वारा कक्षा 3 तक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) के लक्ष्यों को प्राप्त करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में फाउंडेशनल स्टेज में सम्मिलित 3 से 8 वर्ष तक की उम्र के बच्चों में से, 3 से 6 वर्ष की उम्र तक आंगनबाड़ी/प्री स्कूल ध्बाल वाटिकाओं में शिक्षा की व्यवस्था होगी, इस पूर्व प्राथमिक शिक्षा कहा गया है। 6 से 8 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 एव 2 की शिक्षा की व्यवस्था होगी। अतः पूर्व–प्राथमिक शिक्षा क्रम में ही बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का बीजारोपण एवं अंकुरण हो जाना बहुत जरुरी है। पूर्व प्राथमिक पाठ्यचर्या 2019 में रेखांकित किया गया है "3–6 वर्ष की आयु के दौरान बच्चों की जिन सर्वांगीण क्षमताओं का विकास होता है, वे विद्यालय में उनके समायोजन एवं उनके खुशहाल जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक होती हैं।"[2] उत्तराखण्ड राज्य में सरकारी स्तर पर आंगनबाड़ी केन्द्रों से पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की अपेक्षा की गयी है। वर्तमान में आंगनबाड़ी केंद्र के कार्य दायित्वों में 3 से 6 वर्ष के लिए पूर्व–प्राथमिक एवं अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करना है। उत्तराखंड राज्य ने 12 जुलाई 2022 से 'बाल वाटिका' (प्राइमरी से पहले की कक्षा) की शुरुआत करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने वाला पहला राज्य होने का दावा किया है। प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित आँगनबाड़ी केन्द्रों को 'बाल वाटिका' की भूमिका में देखा जा रहा है। अतः यह समीचीन जान पड़ता है कि वर्तमान में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्रों की वस्तुस्थिति, इनकी पाठ्यचर्या का गहन अवलोकन, इन केन्द्रों में नामांकित 3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चों की भाषा एवं गणितीय दक्षता स्तर का आंकलन करके यह जानने–समझने की कोशिश की जाए कि वर्ष 2026–27 तक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निपुण भारत मिशन में अपना योगदान देने के लिए किस तरह से तैयार हैं? उनकी चुनौतियाँ एवं जरूरतें क्या हैं? इसी उद्देश्य से यह अध्ययन किया गया है। छोटे प्रतिदर्श पर आधारित इस अध्ययन से सामने आया कि आंगनबाड़ी केंद्र जरुरी भौतिक संसाधनों की कमी, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लिए जरुरी शिक्षणशास्त्रीय कौशल (खेल–आधारित, गतिविधि–आधारित, कला–आधारित आदि) की कमी का सामना कर रहे हैं। बुनियादी साक्षरता एवं संख्य ज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए माता–पिता एवं अभिभावकों की सहभागिता में कमी महसूस करते हैं। एक आश्चर्यजनक किन्तु महत्वपूर्ण तथ्य यह सामने आया कि आंगनबाड़ी केन्द्रों में तीन वर्ष की उम्र के बाद बच्चों की संख्या में सारभूत कमी आ जाती है। इसका प्रमुख करण यह सामने आया कि अभिभावक 3 वर्ष की उम्र या इसके बाद निजी विद्यालयों की पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में अपने बच्चों का दाखिला कराना पसंद करते हैं। यह प्रवृत्ति एक ओर आंगनबाड़ी केन्द्रों की बालवाटिका के रूप में पूर्व प्राथमिक शिक्षा में भागीदारी से वंचित करती प्रतीत होती है वहीं दूसरी ओर सरकारी प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में विश्वास में कमी की

ओर संकेत करती है, वस्तुतः एक बार जब बच्चे का प्रवेश निजी विद्यालय की पूर्व–प्राथमिक कक्षा में हो जाता है तो उसके सरकारी प्राथमिक शिक्षा प्रणाली की मुख्य धारा में समावेशन की संभावनाएं क्षीण हो जाती हैं। अतः यह निहायत जरुरी हो जाता है कि आंगनबाड़ी केन्द्रों को न केवल भौतिक संसाधनों से परिपक्व बनाये जाने की जरुरत है वरन इन केन्द्रों में कार्यरत कार्यकत्रियों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु उपयुक्त शिक्षणशास्त्र, शिक्षण कौशल में प्रशिक्षित करने, अभिमुखीकृत करने की भी समान रूप से जरुरत है। आँगनबाड़ी केन्द्र बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण एजेंसी की भूमिका निर्वहन कर सकती है, पूर्व प्राथमिक शिक्षा की ठोस बुनियाद रख सकती है बशर्ते कि इनकी भौतिक एवं अकादमिक जरूरतों को संवेदनशीलता के साथ संबोधित किया जाए।

(877 शब्द)

मुख्य शब्दः बाल–वाटिका, निपुण भारत, विद्या प्रवेश, बुनियादी साक्षरता, संख्या ज्ञान।

प्रस्तावना

समान्य तौर पर जन्म से लेकर आठ वर्ष की उम्र को प्रारम्भिक बाल्यावस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसमें भी तीन वर्ष से आठ वर्ष की बाल्यावस्था को शैक्षिक दृष्ट से बहुत अहम माना जाता है। सतत विकास लक्ष्य (एस०डी०जी०) के संदर्भ में प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा को विशिष्ट लक्ष्य के रूप में घोषित किया गया है। एस०डी०जी० 4.2 के तहत यह सुनिश्चित किया जाना है कि वर्ष 2030 तक सभी बालक एवं बालिकाओं को (वंचित समूहों, दिव्यांगों एवं स्वास्थ्य के स्तर पर पिछड़े सहित) तक उच्च गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक देखभाल एवं प्री–स्कूल तक पहुँच हो, जिससे बच्चे आगामी प्रारम्भिक शिक्षा के लिए क्षमतावान हो सकें। विकास कि दृष्टि से भी प्रत्येक बच्चे के लिए जीवन के प्रारम्भिक वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, शरीर विज्ञानियों का मानना है कि इस दौरान बच्चों का विकास अन्य आयु वर्ग कि तुलना में तीव्र गति से होता है। शोधों के आधार पर यह दावा किया जाता है कि बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष कि आयु के पूर्व ही हो जाता है। वस्तुतः बच्चे का समग्र विकास न केवल पोषण एवं स्वास्थ्य से प्रभावित होता है वरन बच्चे को प्राप्त अनुभवों एवं परिवेशीय वातावरण से भी प्रभावित होता है। अतः इस आयु–अवधि में बच्चों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के ठोस अनुभव मिलने ही चाहिए, इस बुनियाद पर आगामी शिक्षार्थी जीवन में सीखने एवं समग्र विकास में कोई रुकावट न आ सके। 29 जुलाई 2020 को घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा को उच्च प्राथमिकता के रूप में रेखांकित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित 5३3४ शिक्षा प्रणाली में, 3 वर्ष की उम्र से आठ वर्ष उम्र तक के बच्चों कि शिक्षा को फाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा कहा गया है। पाँच वर्ष की फाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा में शुरुआती तीन वर्षों में, तीन वर्ष से छह वर्ष तक की

उम्र के बच्चों के लिए कक्षा 1 से पूर्व तीन वर्ष प्री–प्राइमरी स्तर की शिक्षा प्रस्तावित की गयी है। इन तीन वर्षों में पहले शुरुआती दो वर्ष पूर्व प्राथमिक शिक्षा 1, 2 तथा तीसरा वर्ष 'बाल वाटिका' के रूप में प्रस्तावित किया गया है। बच्चे 6 वर्ष की उम्र में कक्षा 1 में औपचारिक शिक्षा में प्रवेश करेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक विशिष्ट पहलू यह भी है कि इसमें कक्षा 3 तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी) विकसित करने पर जोर दिया गया है। इसके लिए केंद्र सरकार ने 5 जुलाई 2021 को एक राष्ट्रीय मिशन 'निपुण भारत' (NIPUN Bharat) की शुरुआत की गयी है। जिसे नेशनल इनिसिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी (NIPUN) कहा गया है। इस मिशन के तहत 3 से 8 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों की पढने–लिखने एवं गणितीय समझ की क्षमता विकसित की जानी है। इस बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए वर्ष 2026–27 की समय सीमा तय की गयी है। यहाँ बुनियादी साक्षरता का आशयय मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग (ध्वनि और आकार में तालमेल), पढने का प्रवाह, पाठ बोधन एवं उद्देश्यपूर्ण लेखन से है। बुनियादी संख्या ज्ञान मेंय संख्या बोध, आकार और स्थानिक से संबंध, नाप, डेटा संधारण (Data Processing) सम्मिलित है। हमारे देश में प्री–स्कूल शिक्षा की व्यवस्था सरकारी, निजी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा की जाती है। सरकारी क्षेत्र में प्री–स्कूली स्तर की शिक्षा, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा केन्द्र (ई०सी०सी०ई०), (इनको आम बोलचाल की भाषा में आंगनबाड़ी केंद्र भी कहा जाता है) द्वारा की जा रही होगी ऐसा विश्वास किया जाता रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद आँगनबाड़ी केन्द्रों से अनिवार्यतः अपेक्षित है कि प्री–प्राइमरी/नर्सरी स्तर की शिक्षा प्रदान करे तथा बुनियादी भाषायी तथा गणितीय दक्षता के साथ प्राथमिक स्तर की पहली कक्षा (कक्ष 1) में सहज पारगमन (Smooth Transmission) में सहायक बनें। वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य में, सरकारी स्तर पर प्राथमिक विद्यालयों के साथध्परिसर में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र तथा प्राथमिक विद्यालयों से अलग स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में तथा गैर–सरकारी स्तर पर प्राथमिक विद्यालय के साथ–साथ संचालित प्री–प्राइमरी कक्षाएं तथा केवल प्री–प्राइमरी स्कूल के रूप में संचालित विद्यालय के माध्यम से प्री–स्कूली शिक्षा अनौपचारिक रूप से प्रदान की जाती है। वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य में 20067 आंगनबाड़ी केंद्र संचालित हैं, इनमें से 5120 मिनी आंगनबाड़ी केंद्र हैं। इनमें से 6048 आंगनबाड़ी केंद्र सरकारी प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित हैं। उत्तराखण्ड राज्य ने 12 जुलाई 2022 को 'बाल वाटिका' (प्राइमरी से पहले की कक्षा) का शुभारम्भ करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू करने वाला पहला राज्य होने का दावा किया है। पहले चरण में, सरकारी प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित 4447 आंगनबाड़ी केन्द्रों में बाल–वाटिका संचालित करने का निर्णय लिया गया है। पहले चरण में 'बाल वाटिकाएं' आँगन बाड़ी केन्द्रों में संचालित होंगी। ऐसे आंगनबाड़ी केन्द्रों में 3–4 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए आंगनबाड़ी–1, 4–5 वर्ष आयु वर्ग बच्चों के लिए आंगनबाड़ी–2 तथा 5–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए आंगनबाड़ी–3 के रूप में 'बाल वाटिका' संचालित होगी। इन बाल वाटिकाओं में आवश्यक भाषायी तथा गणितीय दक्षताओं के साथ बच्चों को कक्षा 1

में प्रवेश के लिए तैयार किया जाना है। ये आँगन बाड़ी केंद्र, महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत संचालित हैं। इन आंगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यरत कार्मिकों, जो महिला ही होती हैं को कार्यकत्री/सहायक कार्यकत्री कहा जाता है। उत्तराखण्ड राज्य में, पूर्व में इनकी योग्यता 10 वीं पास थी, जिसे वर्ष 2022 में बढाकर 12 वीं कर दिया गया है। प्री–प्राइमरी/नर्सरी कक्षाओं के शिक्षण के लिए किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण योग्यता/अनुभव इनके पास नहीं होता और न ही यह आंगनबाड़ी कार्यकत्री/सहायक कार्यकत्री के रूप में चयन के लिए यह जरुरी होता है। 'बाल वाटिका' के रूप में चिन्हित आंगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यरत कार्यकत्रियों का 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' के दृष्टिगत अभी तक किसी भी प्रकार का औपचारिक प्रशिक्षण नहीं हुआ है। अभी हाल में अक्टूबर 2023 में गूगल मीट के माध्यम से अभिमुखीकरण करने का प्रयास किया गया है।

जनपद बागेश्वर में 874 आंगनबाड़ी केन्द्रों में 14128 बच्चे नामांकित हैं। इनका विवरण निम्नाकित तालिका–01 में दिया गया है–

तालिका–01
जनपद बागेश्वर में आंगनबाड़ी केंद्र एवं नामांकित बच्चों की संख्या (30.09.2023 को)

विकास खंड	पूर्ण आंगनबाड़ी केंद्र	मिनी आंगनबाड़ी केंद्र	योग	नामांकित बच्चे		
				बालक	बालिकाएं	योग
बागेश्वर	229	96	325	2841	2719	5560
गरुड़	154	94	248	2097	2007	4104
कपकोट	178	83	261	2283	2181	4464
योग	**561**	**273**	**874**	**7221**	**6907**	**14128**

श्रोतः जिला महिला एवं बाल विकास परियोजना कार्यालय, जनपद बागेश्वर।

विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड से प्राप्त नवीनतम आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2020–21 में जनपद बागेश्वर में प्राथमिक विद्यालयों में 11073 बच्चे नामांकित थे। जिसका विवरण निम्नांकित तालिका–02 मदन दिया गया है–

तालिका–02
जनपद बागेश्वर में प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित बच्चे (2020–21)

विवरण	बालक	बालिका	योग
सामान्य	2403	2939	5342
अनुसूचित जाति	2475	2662	5137
अनुसूचित जन–जाति	34	38	72
अन्य पिछड़ी जाति	262	260	522
कुल योग	**5174**	**5899**	**11073**

श्रोतः विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड, उत्तराखण्ड का शैक्षिक परिदृश्य–शैक्षिक सांख्यकी 2020–21

उक्त तालिका –01 एवं 02 का विश्लेषण करने पर एक तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आता है कि जनपद का आंगनबाड़ी केंद्र जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन का मुख्य पोषक (Feeder) हैं। यदि आंगनबाड़ी केंद्र मजबूत भाषायी एवं गणितीय बुनियाद के साथ पूर्व–प्राथमिक/नर्सरी शिक्षा प्रदान करने में असमर्थ रहते हैं तो कक्षा 1 में सहज पारगमन (Smooth Transition) नहीं हो सकेगा और अंततः इसका परिणामी प्रभाव आगामी वर्षों में प्राथमिक स्तर की शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ना स्वाभाविक है। 'बच्चों के जीवन के पहले आठ वर्ष बहुत ही अहम होते हैं। इन शुरुआती वर्षों में ही उसके जीवन भर की भलाई (Well being) और सभी आयामों यथा–शारीरिक, संज्ञानात्मक, और सामाजिक–भावनात्मक में समग्रवृद्धि और विकास की नीव पड़ जाती है।'[2]

अध्ययन की आवश्यकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 घोषित होने के बाद, यह नीतिगत दस्तावेज, आगामी वर्षों तक, भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में प्रमुख मार्गदर्शक दस्तावेज बना रहेगा। अतः यह समीचीन प्रतीत होता है कि इसके प्री–स्कूली शिक्षा से सरोकार रखने वाले विचारणीय पहलुओं पर विचार विमर्श किया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सीखने के लिए तत्काल और आवश्यक शर्त के रूप में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर जोर दिया गया है।[3] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में, कक्षा 3 तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी) विकसित करने पर जोर दिया गया है। इसके लिए केंद्र सरकार ने 5 जुलाई 2021 को एक राष्ट्रीय मिशन निपुण भारत (NIPUN Bharat) की शुरुआत की गयी है। निपुण भारत मिशन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य हैय 3 से 8 वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों का शिक्षा की मुख्यधारा में समावेशन, शिक्षार्थी जीवन के आगामी वर्षों में बच्चों में सतत रूचि एवं उत्साह का बने रहना तथा एक ठोस बुनियाद के साथ स्कूली स्तर पर औपचारिक शिक्षा में प्रवेश करना। यदि प्री–स्कूली शिक्षा की मुख्यधारा में सभी बच्चों का एक ठोस बुनियाद के साथ समावेशन करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का महत्वपूर्ण सरोकार है (यह सुखद रूप से उत्साहवर्द्धक है) तो इस समावेशन के लिए उपयुक्त बुनियादी ढांचे एवं सामर्थ्य की जांच–पड़ताल करना, इसके लिए विमर्श करना बहुत जरूरी हो जाता है। इस अध्ययन की आवश्यकता इस कारण से भी महसूस होती है कि 'फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी' सम्बन्धी कतिपय अध्ययन विगत में किए गए हैं परन्तु आंगनबाड़ी केन्द्रों की पूर्व–प्राथमिक शिक्षा में भूमिका एवं सामर्थ्य के सन्दर्भ में अध्ययनों का अभाव नजर आता है। यह अध्ययन अंतिम नहीं है, इस विचार प्रवाह में बहुत सारे उपयोगी विचारों को आमंत्रित करने और समाहित करने की जरूरत के दृष्टिगत इस अध्ययनध्पर्चे को प्रस्तुत किया जा रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पूर्व–प्राथमिक/नर्सरी स्तर की शिक्षा में आंगनबाड़ी केन्द्रों (ECCEs) की अहम् भूमिका को रेखांकित किया गया है। इसी स्तर पर सार्वभौमिक 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' की शुरुआत होनी है, जिससे वर्ष 2026–27 तक कक्षा 3 के स्तर

पर सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का महत्वाकांक्षी लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। सबसे महत्वपूर्ण बात जो रेखांकित करने योग्य है, वह यह है कि पूर्व–प्राथमिक/नर्सरी कक्षाओं से कक्षा 1 तक बच्चों का सहज पारगमन (Smooth Transition), साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की मजबूत बुनियाद के साथ होना है। अतः यह अध्ययन शोध जिज्ञासाओं के संतुष्टि के क्रम में निम्नांकित उद्देश्यों से किया गया है–

- पूर्व–प्राथमिक/नर्सरी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में आंगनबाड़ी केंद्र की मौजूदा आधारभूत सुविधाओं एवं अकादमिक सामर्थ्य को जानना–समझना।
- आंगनबाड़ी केंद्र में नामांकित 3–6 आयु वर्ग के बच्चों की बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान से संदर्भित भाषा एवं गणितीय दक्षता का आकलन करना।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सन्दर्भ में आंगनबाड़ी केंद्र में कार्यरत कार्यकत्रियों की परिचय/अवधारणात्मक समझ की वस्तु–स्थिति जानना तथा एतद् सम्बन्धी अभिमुखीकरण/प्रशिक्षण की स्थिति एवं जरुरत का आकलन करना।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने से संन्दर्भित आंगनबाड़ी केंद्र में कार्यरत कार्यकत्रियों की चुनौतियों को चिन्हित करना।
- अध्ययन अनुभव के आधार पर व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्यवलोकन

इस अध्ययन के क्रम में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की वस्तु–स्थिति की गहरी समझ हेतु भारत सरकार के फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी (निपुण भारत) गाइडलाइन्स फॉर इम्प्लीमेंटेशन, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज 2022, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, रूम टू रीड द्वारा अद्यतन प्रकाशित फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी रिपोर्ट (2 जनवरी 2023), यू–डायस रिपोर्ट 2021–22, स्कूल शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का गहन अनुशीलन किया गया। इसके अतिरिक्त के शोध अध्ययन, अर्ली लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी एक्टिविटीज (एर्सोन एंड रोद्रिगुए 2020), न्यूमेरेसी रिलेटेड एंगेजमेंट (सिमोन 2024), लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी स्किल्स अमंग चिल्ड्रन इन डेवलपिंग कन्ट्रीज (बाल, जे., पेरिस, एस. जी., गोविन्द, आर. 2014), अर्ली लिटरेसी डेवलपमेंट : स्किल ग्रोथ एंड रिलेशन बिटवीन क्लासरूम वेरिएबल्स (मिस्साल, के.एन., मकोनेल, एस.आर., कादिगन, के. 2006) एवं फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी (एन.इ.पी. 2020)–अर्जेंसी, एसेंशियल स्किल्स, चौलेंजेज एंड दि इंटीग्रेशन ऑफ की एरियाज (बशीर, रुखसाना., जान, तसलीमा. 2023) के विश्लेषण से इस अध्ययन को एक स्पष्ट दिशा प्राप्त हुई। इसके साथ–साथ सोद्देदय चयनित आंगनबाड़ी केन्द्रों (ECCEs) के अवलोकन, इनमें कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से खुली साक्षात्कार प्रश्नावली के माध्यम से गुणात्मक समंक एकत्रित किये गए। चयनित आंगनबाड़ी केन्द्रों में नामांकित 3–6 आयुवर्ग के बच्चों का भाषा एवं गणितीय दक्षताओं का आंकलन करके प्राथमिक समंक प्राप्त

किये गए। जनपद के महिला एवं बाल विकास परियोजना कार्यालय से आंगनबाड़ी केन्द्रों से सम्बंधित शासकीय आदेश, उपलब्द्ध प्राथमिक समंकों का उपयोग एवं विश्लेषण किया गया।

शोध प्रविधि

यह अध्ययन ऐतिहासिक, गुणात्मक, विश्लेष्णात्मक एवं विवरणात्मक अध्ययन सभी के मिश्रित स्वरुप का है। अध्ययन में सम्मिलित दस आंगनबाड़ी केन्द्रों के गहन अवलोकन (अवलोकन तालिका संलग्नक 01 में दी गयी है), केंद्र में नामांकित 3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चों का भाषा एवं गणितीय दक्षता के आकलन और इन केन्द्रों कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से खुले साक्षात्कार प्रश्नावली (साक्षात्कार प्रश्नावली संलग्नक 02 में दी गयी है) के माध्यम से मात्रात्मक एवं गुणात्मक समंक प्राप्त किये गए। राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत), राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित निपुण भारत तालिका–भाषा (बाल वाटिका)[4] एवं गणित (बाल वाटिका)[5] के माध्यम से 3 से 6 आयु वर्ग के बच्चों की दक्षताओं का आकलन किया गया है। (इसका विवरण संलग्नक संख्या 03 एवं 04 में दिया गया है) ।

प्रतिदर्श

इस अध्ययन में जनपद बागेश्वर के फल्याँटी एवं आरे संकुल के 10 आंगनबाड़ी केन्द्रों का सोद्देश्य चयन किया गया है। सेवा कार्य–दायित्वों के मध्य समय की उपलब्द्धता, पहुँच एवं अवलोकन एवं चर्चा के लिए अवसर आदि कारणों से सोद्देश्य प्रतिदर्श चयन किया गया है। इनमें 10 आंगनबाड़ी केन्द्रों में से 8 पूर्ण आंगनबाड़ी केंद्र हैं तथा 2 मिनी आंगनबाड़ी केंद्र। प्रत्येक पूर्ण आंगनबाड़ी केन्द्र में दो कार्यकत्रियां कार्यरत हैं, इनमें से एक मुख्य तथा दूसरी सहायक कार्यकत्री हैं। मिनी आंगनबाड़ी केंद्र में केवल एक सहायक कार्यकत्री कार्यरत हैं। इन 10 आंगनबाड़ी केन्द्रों में से 4 आंगनबाड़ी केंद्र सरकारी प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित है, अर्थात देर–सबेर इन केन्द्रों को बाल वाटिका की भूमिका का निर्वहन करना है। इन 10 आंगनबाड़ी केन्द्रों में 3 से 6 आयु वर्ग के कुल 45 बच्चों को इस अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इन 45 बच्चों में 24 बालक एवं 21 बालिकाएं हैं। (इनका विवरण संलग्नक 05 में दिया गया है)।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के लिए राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत), राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित निपुण भारत तालिका–भाषा (बाल वाटिका) एवं गणित (बाल वाटिका) इस्तेमाल की गयी हैं। इसके द्वारा अध्ययन हेतु चयनित 10 आंगनबाड़ी केन्द्रों में नामांकित 3 से 6 आयु वर्ग के बच्चों की दक्षताओं का आकलन किया गया है। (इसका विवरण संलग्नक संख्या 03, एवं 04 में दिया गया है)

डिजाईन

यह अध्ययन विवरणात्मक, विश्लेष्णात्मक एवं गुणात्मक अध्ययन पद्धतियों का सम्मिश्रित स्वरुप का है।

आंगनबाड़ी केंद्र

भारत सरकार द्वारा प्रायोजित एवं वित्त पोषित 'समेकित बाल विकास योजना' 02 अक्टूबर 1975 से प्रारंभ की गयी। 6 वर्ष तक की आयु के बच्चों के दृष्टिगत इस योजना के निम्न उद्देश्य हैं[6]–

- 6 वर्ष आयु वर्ग तक के बच्चों की पोषण एवं स्वास्थ्य दशाओं में सुधार करना।
- बच्चों के समुचित मनोवैज्ञानिक, शारीरिक एवं सामाजिक विकास की नींव रखना।
- मृत्यु दर, बीमारी, कुपोषण की समस्या को कम करना तथा स्कूल ड्राप आउट की प्रवृत्ति को कम करना।
- बच्चों के विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों में तालमेल बिठाना।
- बच्चों की सामान्य स्वास्थ्य एवं पोषण की जरूरतों की देखभाल के लिए माताओं की क्षमता का संवर्धन करना।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के दृष्टिगत बच्चों को अनौपचारिक (Non Formal) शिक्षा।

आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से उक्त उद्देश्यों की संप्राप्ति की अपेक्षा की जाती है। गर्भवती एवं धात्री महिलाओं की पोषण एवं स्वास्थ्य जरूरतों को संबोधित करना भी आंगनबाड़ी के कार्य क्षेत्र में समाहित है। इसके अतिरिक्त महिलाओं एवं किशोरियों के स्वास्थ्य एवं पोषण की विभिन्न योजनाओं को लाभार्थी तक पहुंचाने में इन केन्द्रों को एक अहम् एजेंसी के रूप में देखा जाता है।

बाल वाटिका

5 वर्ष की आयु से पहले बच्चा प्रारंभिक कक्षा या बाल वाटिका (जो कक्षा 1 से पहले की कक्षा है) में स्थानांतरित हो जायेगा। बाल वाटिका की यह कक्षा बच्चे की संज्ञानात्मक, भावनात्मक, शारीरिक क्षमताओं तथा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) के विकास पर केन्द्रित होगी। इस अवधि में बच्चा 3 माह का स्कूल तैयारी कोर्स 'विद्या प्रवेश' पूर्ण करेगा। निपुण भारत मिशन के तहत कक्षा 1 में प्रवेश की तैयारी के दृष्टिगत इसके निम्नाकित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं[7]–

- कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना।

- कक्षा 1 में बच्चों के सहज पारगमन (Smooth Transition) को सुनिश्चित करना।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कक्षा में मनोरंजक एवं प्रेरक वातावरण का सृजन करना ताकि उन्हें खेल–खेल में सीखने और उनकी आयु के अनुकूल एवं उपयुक्त शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान किये जा सकें।
- खेल आधारित माध्यमों से बच्चों में संज्ञानात्मक एवं भाषाई कौशलों का विकास करना। ये ऐसी पूर्व शर्तें हैं जो बच्चों को पढना–लिखना सीखने एवं संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार करती हैं।

बाल वाटिका कक्षा में बच्चों की किसी प्रकार की परीक्षा से नहीं गुजरना है, अतः अवलोकन, वृतांत लेखन (Anecdote), पोर्ट–फोलियो, रेटिंग स्केल, जांच सूची, बच्चे की सहभागिता एवं प्रदर्शन के माध्यम से फॉरमेटिव असेसमेंट किया जायेगा।[8]

निपुण भारत मिशन

वर्ष 2026–27 तक भारत में स्कूली शिक्षा के दृष्टिगत सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन 'निपुण भारत' 5 जुलाई 2021 से लागू किया गया है। इसके अंतर्गत, बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें आयु के अनुसार उपयुक्त अनुभव प्रदान करने के लिए एक रूपरेखा सुझायी गयी है, जिसमें 3 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए निरंतरता (Continuum) में 'सीखने के प्रतिफलों' का निर्धारण किया गया है। तीन विकासात्मक लक्ष्यों के माध्यम से बच्चों के समग्र विकास करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा गया है। शारीरिक गत्यात्मक विकास, सामाजिक–भावनात्मक विकास, साक्षारता और संख्या ज्ञान, संज्ञानात्मक विकास को तीन विकासात्मक लक्ष्यों समाहित किया गया है। तीन विकासात्मक लक्ष्य निम्नवत हैं[9]–

1. बच्चे का अच्छा स्वास्थ्य एवं खुशहाली बनाए रखना।
2. बच्चे का प्रभावशाली संप्रेषक बनना।
3. बच्चों द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस–पास के परिवेश से जुड़ना।

भारत में दक्षता आधारित शिक्षा की यात्रा

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के तहत निपुण भारत अभियान में भाषा एवं गणित विषय में बुनियादी दक्षता प्राप्त करने पर जोर दिया गया है। अतः स्कूली शिक्षा में दक्षता आधारित शिक्षा की यात्रा को जानना–समझना समीचीन होगा। भारत वर्ष में नई शिक्षा नीति 1986 और बाद में प्रोग्राम ऑफ एक्शन (Program of Action) 1992 में कहा गया कि सीखने के न्यूनतम स्तर (Minimum Level of Learning) निर्धारित किये जाने चाहिए और इस स्तर की प्राप्ति को

सुनिश्चित करने हेतु बच्चों की प्रगति पर नजर रखने की जरुरत होगी, समय–समय पर बच्चों के सीखने का आकलन करना चाहिए। सीखने के न्यूनतम स्तर की अवधारणा में ही बुनियादी खामी थी और इस दिशा में विशेष प्रगति भी नहीं हो सकी। बीसवीं शताब्दी के आंखिरी दशक के पूर्वार्द्ध में डी.पी.ई.पी., सर्वशिक्षा अभियान, और बाद में समग्र शिक्षा अभियान में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधर की बातें लगातार की जाती रहीं परन्तु जमीनी हकीकत में कोई सारभूत अंतर नहीं आया। बच्चों के शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 में स्वाभाविक शिक्षार्थी के रूप में बच्चों द्वारा ज्ञान सृजन की क्षमता को पाठ्यचर्या क्रियान्वयन को केंद्र बिंदु के रूप में निरूपित किया गया और शिक्षक की भूमिका प्रमुख रूप से सीखने की प्रक्रिया में सुगमकर्त्ता के रूप में चिन्हित की गयी। शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 में एक नए प्रावधान 'सीखने के प्रतिफल' को जोड़ने के लिए 20 फरवरी 2017 में शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 23(2) में संशोधन किया गया। वर्ष 2017 में प्रत्येक कक्षा एवं विषय के लिए प्राथमिक स्तर पर 'सीखने के प्रतिफल' विकसित किए गए। वर्ष 2019 में माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से कक्षा 12 तक) 'सीखने के प्रतिफल' विकसित किए गए। सीखने के प्रतिफल पदानुक्रमित तरीके से नहीं सुझाए गए हैं वरन शिक्षार्थी इन्हें अपनी गति एवं कौशलों के अनुसार प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ पर रेखांकित करना समीचीन होगा कि पूर्व–प्राथमिक स्तर पर इस प्रकार के 'सीखने के प्रतिफल' विकसित नहीं किए गए। बाद में वर्ष 2022 में फाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कि रूपरेखा के अंतर्गत 'सीखने के प्रतिफल' निरूपित किए गए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 ने इस बात को विशेष रूप से रेखांकित किया कि भारत सीखने कि एक गंभीर समस्या से जूझ रहा है। लगभग पाँच करोड़ बच्चों ने बुनियादी साक्षारता एवं संख्या ज्ञान प्राप्त नहीं किया है, अर्थात ऐसे बच्चों को मूलभूत पठन सामग्री पढ़ने और समझने की योग्यता तथा अंकों के साथ मूलभूत जोड़ और घटाने की क्षमता भी नहीं है। इन मुद्दों को तत्काल मिशन मोड में संबोधित करने की आवश्यकता है। इसलिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन 'निपुण भारत' 5 जुलाई 2021 को अस्तित्व में आया। इस मिशन का उद्देश्य बच्चों को पढ़ने और समझते हुए प्रतिक्रिया देने, समझ के साथ स्वतंत्रतापूर्वक उद्देश्यपूर्ण तरीके से लिखने, अंक, माप और आकृति के क्षेत्रों में तर्क को समझने और समस्या के समाधान में स्वतंत्र बनाना है। बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें आयु के अनुसार उपयुक्त अनुभव प्रदान करने के लिए एक रूपरेखा सुझायी गयी है, जिसमें 3 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए निरंतरता (Continuum) में 'सीखने के प्रतिफलों' का निर्धारण किया गया है।

परिचर्चा एव परिणाम

वर्तमान में स्कूली शिक्षा के अंतर्गत सीखने का स्तर गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। 'वर्तमान समय में भारत में अधिगम का संकट है, जबकि बच्चे प्राथमिक विद्यालय में नामांकित हैं, तब से वे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के बुनियादी कौशल प्राप्त करने में असफल हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चों के कक्षा 1 में प्रवेश करने से पहले ही ऐसा कुछ हो रहा है, जो इस संकट का प्रमुख श्रोत हो।'[10] इतना नहीं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 में स्वीकार

किया गया है 'वर्तमान में अनुमानतः 5 करोड़ से अधिक बच्चों ने प्राथमिक स्तर पर बुनियादी साक्षरता और गणितीय समझ प्राप्त नहीं की है।'[11] इस नीतिगत दस्तावेज में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान हेतु निपुण भारत मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ई.सी.सी.ई. (प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा केंद्र) की प्रमुख भूमिका को रेखांकित किया गया है और प्री–स्कूली शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। अनुसंधानों से पता चलता है कि यदि बच्चे एक बार बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में पीछे रह जाते हैं तो वे वर्षों तक इस पिछड़ी अवस्था में रहते हैं। ऐसा इसलिए है कि कक्षा 3 तक की पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम बच्चों को पढने–लिखने की और संख्या ज्ञान की बुनियादी समझ और कौशल प्राप्त करने पर केन्द्रित होते हैं। यदि बच्चों ने साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की बुनियादी समझ एवं कौशल कक्षा 3 के स्तर तक प्राप्त नहीं किये हैं तो इस बिंदु के बाद सीखने की मुश्किलें लगातार बढती जाती हैं। ऐसा इसलिए भी होता है कि बाद की कक्षाओं में भाषा की पाठ्य पुस्तकें और गणित का स्तर अधिक जटिल और सार–गर्भित होते जाते हैं। इस दृष्टि से फाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा एवं पाठ्यचर्या अहम रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। कक्षा 3 के बाद बच्चों से पढने–लिखने में सक्षम होने तथा अंकगणित में दक्षतापूर्ण तरीके से आगे बढ़ने की उम्मीद की जा सकती है।

आंगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों का दक्षता स्तर का आकलन

प्रतिदर्श में चयनित 09 आंगनबाड़ी केन्द्रों में नामांकित 3–6 आयु वर्ग के 45 बच्चों का निपुण भारत अभियान के तहत सुझायी गयी दक्षता आकलन तालिका के माध्यम से भाषा एवं गणितीय दक्षताओं का आकलन किया गया। (आंगनबाड़ी केंद्र घिरोली में 3–6 आयु वर्ग का कोई बच्चा नामांकित नहीं है). आकलन के लिए बच्चों से बातचीत की गयी, अधिकतर बच्चे अपनी घर की भाषा (यह भाषा कुमांउनी है) में सहज थे, अतः इन बच्चों से कुमांउनी भाषा में भी बातचीत की गयी। यह आकलन अगस्त–सितम्बर 2023 में किया गया। इस आकलन के परिणामों को निम्नांकित तालिका–03 एवं 04 में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका–03
निपुण भारत अभियान तालिका–भाषा (बाल वाटिका)

विषय	दक्षताएं	बालक	बालिका
मौखिक भाषा	1. दोस्तों और शिक्षकों से बात करना।	19	17
	2. समझ के साथ तुकांत/कविताएं गाना।	11	10
पढ़ना	3. किताबों को देखना और चित्रों की मदद से कहानी पढ़ने का प्रयास करना।	09	07
	4. कुछ परिचित दोहराए गए शब्दों को पहचानने और इंगित करने की शुरुआत करना (दृष्टि शब्दों या खाद्य कंटेनर/रैपर पर छपे शब्द)।	07	06
	5. अक्षरों एवं संगत ध्वनियों को पहचानना।	10	09
	6. कम से कम दो अक्षरों वाले सरल शब्दों को पढ़ना।	08	07

लेखन	7. खेल के दौरान पहचान वाले अक्षरों को लिखने का प्रयास करना।	05	04
	8. आत्म अभिव्यक्ति के लिए पेंसिल घसीटना या चित्र बनाना।	12	13
	9. पेंसिल को ठीक से पकड़ना और पहचानने योग्य अक्षर बनाने के लिए उपयोग करना।	10	11
	10. अपने नाम के पहले शब्द को पहचानना	19	16

तालिका–04

निपुण भारत अभियान तालिका–गणित (बाल वाटिका)

विषय	दक्षताएं	बालक	बालिका
संख्यात्मक	1. वस्तुओं की गिनती और 10 तक संख्याओं से सह–संबंध स्थापित करना।	18	16
	2. 10 तक के अंकों को पहचानना और पढ़ना।	19	18
	3. वस्तुओं की संख्या के संदर्भ में दो समूहों की तुलना करना और अधिक/कमरुबराबर आदि जैसे शब्दों का उपयोग करना।	21	19
	4. एक क्रम में घटनाओं की संख्या/वस्तुओं/आकृतियों/घटनाओं को व्यवस्थित करना।	16	15
	5. वस्तुओं को उनकी अवलोकनीय विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करना और वर्गीकरण के मानदंड का संचार करना।	11	09
	6. अपने आसपास की विभिन्न वस्तुओं के संदर्भ में तुलनात्मक शब्दों का उपयोग करना, जैसे–लंबे, सबसे लंबे, सबसे छोटे से अधिक, हल्के आदि।	22	19

आकलन (तालिका–03) से स्पष्ट है कि मौखिक भाषा में बच्चों का दक्षता स्तर अपेक्षाकृत बेहतर है। बालक एवं बालिकाओं दोनों का प्रदर्शन स्तर संतोषजनक नजर आता है। पढने की दक्षता में बच्चों का प्रदर्शन औसत/औसत के आसपास ही प्रतीत होता है। आकलन के दौरान बच्चों से बातचीत में बालिकाओं की तुलना में बालक अधिक मुखर थे। बालिकाओं की कम मुखरता के बारे में कार्यकत्रियों ने बातचीत में बताया कि ये बालिकाएं अच्छी हैं, कम बोलती हैं। इससे इस बात का अनुमान किया जा सकता है कि बालिकाओं को कम उम्र से एक विशेष सांचे में ढाला जाता है, ऐसा न केवल उनके घरों/परिवेश में होता है वरन आंगनबाड़ी केंद्र भी इस अवधारणा को चुनौती देते नजर नहीं आते हैं। लेखन दक्षता में बच्चों का प्रदर्शन, पढने की दक्षता की तुलना में बेहतर नजाए आता है। यहाँ भी आकलन के दौरान पहचान वाले अक्षरों को लिखने में बच्चे कठिनाई महसूस करते नजर आए। पढ़ने की दक्षता से, लेखन दक्षता में बच्चों के बच्चों प्रदर्शन के बारे में आंगनबाड़ी केंद्र में कार्यरत कार्यकत्रियों से बातचीत में एक तथ्य सामने आया कि बच्चों को पढने के अभ्यास से पहले लेखन का अभ्यास कार्य कराया जाता है, उदाहरण के लिए वर्ण–माला लिखना, ब्लैकबोर्ड से शब्दों को लिखना, किताब से लिखना आदि। बच्चे लिखे हुए को अपनी कापी में लिख लेते हैं परन्तु उसको पढ़कर बताने,

अर्थ–संदर्भ बताने में कठिनाई महसूस करते नजर आए। मौखिक भाषा में बेहतर प्रदर्शन, एक सकारात्मक तथ्य है, इससे यह अंतर्दृष्टि मिलती है कि भाषायी दक्षता के लिए मौखिक भाषा/मौखिकता (Oracy) का उपयोग किया जाना जरुरी है। निःसंदेह इसके लिए बच्चों की घर की भाषा को जगह (Space) देने की जरुरत है।

आकलन (तालिका–04) से स्पष्ट है कि गणित विषय में बच्चों की दक्षता का स्तर भाषा की तुलना में बेहतर नजर आता है। आपने आस–पास की वस्तुओं के सन्दर्भ में, तुलनात्मक शब्दों का उपयोग, कम/अधिक/बराबर शब्दों का उपयोग बच्चों के परिवेशीय सन्दर्भ में बहुत आम है। संभवतः इसी कारण से, विशेषकर अवलोकन आधारित गणितीय दक्षताओं में बच्चों का प्रदर्शन बेहतर प्रतीत होता है। इस विषय में बालक एवं बालिकाएं दोनों ही सामान रूप से बेहतर प्रदर्शन करते प्रतीत होते हैं। इससे इस रूढ़ीबद्ध (Stereotype) अवधारणा को चुनौती मिलती है कि बालिकाएं गणित विषय में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकती, अतः उन्हें इसकी जगह कोई अन्य विषय पढना चाहिए। गणित विषय के शिक्षण में बच्चों के परिवेशीय गणित सम्बन्धी अनुभवों को समाहित करने से, बच्चे गणितीय दक्षताओं को बेहतर ढंग से प्राप्त कर सकते हैं। इसके गहन शैक्षणिक निहितार्थ हैं।

आंगनबाड़ी केन्द्रों का अवलोकन

आंगनबाड़ी केन्द्रों के अवलोकन (अवलोकन तालिका संलग्नक 01 में दी गयी है) से एक तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आया कि 0–3 आयु वर्ग के बच्चों की अच्छी संख्या होने के बावजूद 3–6 आयु वर्ग के बच्चों में एकाएक कमी हो जाती है। यह निम्नाकित तालिका–05 से अधिक स्पष्ट हो जाता है–

तालिका–05
अध्ययन में सम्मिलित आंगनबाड़ी केन्द्र एवं नामांकित बच्चों की संख्या (30 सितम्बर 2023)

		पंजीकृत बच्चे 0–3 वर्ष			पंजीकृत बच्चे 0–3 वर्ष		
क्र.सं.	आंगनबाड़ी का नाम	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
1	मण्डलसेरा 1	28	32	60	00	00	00
2	मण्डलसेरा 2	22	17	39	05	05	10
3	मण्डलसेरा 3	16	18	34	05	04	09
4	मल्ला बानरी	04	11	15	01	05	06
5	जीतनगर 1	36	19	55	03	01	04
6	जीतनगर 2	15	16	31	03	01	04
7	भागीरथी	14	14	28	02	02	04
8	गाड़गाँव	03	03	06	04	02	06
9	फल्टनियां	10	05	15	01	01	02
10	घिरोली	11	16	27	00	00	00
		149	151	300	24	21	45

श्रोतः जिला महिला एवं बाल विकास परियोजना कार्यालय, जनपद बागेश्वर, उत्तराखण्ड. 30 सितम्बर 2023.

0–3 वर्ष आयु वर्ग के 300 बच्चे नामांकित हैं, जबकि 3–6 वर्ष आयु वर्ग में यहह संख्या मात्र 45 है। विगत वर्षों में भी कमोवेश यही प्रवृति दिखलायी देती है। इस एकाएक कमी का यह कारण सामने आया कि 3 वर्ष की उम्र होते–होते आर्थिक रूप से समर्थ अभिभावक अपने बच्चों का दाखिला निजी विद्यालयों की नर्सरी कक्षाओं में करा लेते हैं। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में तो नर्सरी कक्षाएं संचालित होती नहीं हैं। आंगनबाड़ी केन्द्रों में वही बच्चे रह जाते हैं, जिनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति अत्यंत विपन्न है। अंततः यही बच्चे सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 में प्रवेश लेते हैं। आंगनबाड़ी केंद्र घिरोली में तो 3–6 आयु वर्ग का एक भी बच्चा नामांकित नहीं था। बातचीत में माताओं/अभिभावकों ने बताया 'बच्चों की पढाई–लिखाई के लिए ऐसा करना जरुरी हो जाता है।' सरकारी विद्यालयों में निरंतर घटते नामांकन की एक प्रमुख वजह यह समझ में आती है और दूसरा आंगनबाड़ी केन्द्रों द्वारा व्यवस्थित रूप से नर्सरी शिक्षा संचालित कर पाने की असमर्थता को भी यह रेखांकित करता है। कुछ आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने तल्ख लहजे में बताया 'आंगनबाड़ी केंद्र तो छोटे बच्चों की देखभाल केंद्र मात्र बनकर रह गए हैं।' इसके अतिरिक्त आंगनबाड़ी केन्द्रों के अवलोकन से रेखांकित करने योग्य निम्न बातें सामने आयीं–

- अवलोकित 10 आंगनबाड़ी केन्द्रों में से मात्र 04 आंगनबाड़ी केंद्र सरकारी प्राथमिक विद्यालय परिसर में संचालित हैं। 04 पंचायत के सामुदायिक भवनों में तथा 02 किराये के मकान में संचालित हैं। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में, विद्यालय द्वारा उपलब्द्ध कराये गए एक कक्ष में संचालित हैं। अतः बच्चों के लिए स्वतंत्र रूप से खेलने/गतिविधियों के आयोजन के लिए पर्याप्त जगह की कमी दृष्टिगत होती है। किराये के कमरे में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्रों में यह समस्या अधिक गहन प्रतीत होती है। केन्द्रों में बच्चों के लिए बैठने के लिए उपयुक्त फर्नीचर उपलब्द्ध नहीं है, बच्चे दरी पर जमीन पर बैठते हैं। बच्चों के साथ आने वाली माताओं/अभिभावकों के लिए बैठने/प्रतीक्षा का अलग से स्थान न होने के कारण, जरुरत पड़ने पर कक्ष में ही बच्चों के साथ दरी पर बैठती हैं। एक सकारात्मक बात यह नजर आयी कि माताएं/अभिभावक अपने बच्चों को केंद्र पर छोड़ने आते हैं, छुट्टी होने तक प्रतीक्षा करते हैं/पुनः लेने आते हैं। इसका कारण यह है कि इन केन्द्रों में 3 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों की संख्या अधिक है, अतः ऐसा करना उनके लिए जरुरी हो जाता है।
- आंगनबाड़ी केन्द्रों में शिक्षण प्रक्रिया का अवलोकन करने पर दृष्टिगत होता है कि केंद्र की प्रमुख चिंता एवं सरोकार बच्चों को यथा समय पोषाहार मिल जाए, इसकी दैनिक आधार पर रिपोर्ट करनी होती है। केंद्र में, खेल सामग्री के रूप में कुछ खिलौनें उपलब्द्ध हैं, इनसे बच्चों को खेलने का मौका दिया जाता है परन्तु इनका शिक्षण–शास्त्रीय उपयोग नजर नहीं आता। बहुधा कार्यकत्रियों की दूसरी व्यस्तताएं होने पर बच्चों को व्यस्त रखने के लिए इन खिलौनों का उपयोग किया जाता है।

शिक्षण एवं अकादमिक प्रक्रियाएं

जहाँ तक आंगनबाड़ी केंद्र में शिक्षण एवं अकादमिक प्रक्रियाओं का प्रश्न है, चयनित आंगनबाड़ी केन्द्रों के अवलोकन के प्रमुख बिंदु निम्नवत हैं–

- आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों को प्रतिदिन पोषाहार दिया जाता है और प्रतिदिन इसकी रिपोर्टिंग उच्च स्तर को करनी होती है। अतः केंद्र पर कार्यरत कार्यकत्री/सहायक कार्यकत्री की मुख्य चिंता एवं सरोकार पोषाहार निर्धारित समय पर बच्चों को उपलब्द्ध कराना है। माताएं/अभिभावक भी इसको तरजीह देते नजर आते हैं।
- बच्चों को परम्परागत विधि से पढ़ाया जाता है। वर्णमाला, मात्राएँ, सरल शब्द, कठिन शब्द, वाक्य आदि। लिखने से शुरुआत की जाती है। बहुधा बच्चे ब्लैक–बोर्ड/व्हाईट बोर्ड पर लिखे हुए को उतारते हैं, बाद में इनको पढ़ने (वस्तुतः रटने) का उपक्रम चलता है। बातचीत में कार्यकत्री/सहायक कार्यकत्रियों ने बताया 'अभिभावक बच्चों की कापी में किये गए काम को, केंद्र में पढ़ाई–लिखाई मानते हैं', इसलिए हम लोग भी कोशिश करते हैं, जल्दी से जल्दी बच्चे लिखने लगें।' लिखने से पहले बच्चों के 'समझकर सुनने', 'अर्थपूर्ण बोलने', 'अभिव्यक्त करने' के कौशलों के विकास करने का उपक्रम नजर नहीं आता है।
- बच्चों से बातचीत बहुत सीमित है, इसके बजाए निर्देश अधिक दिए जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चे भी धीरे–धीरे निर्देशों के अभ्यस्त होने लगे हैं। यह निर्देश केंद्र की औपचारिक भाषा हिंदी में दिए जाते हैं परन्तु बच्चे आपस में बातचीत अपने घर की भाषा में करते हैं। यहाँ पर उल्लेख करना समीचीन होगा कि 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों का भाषा एवं गणितीय दक्षता का आकलन करने के क्रम में बच्चों से बातचीत करने की जरुरत थी। अतः इसके लिए सहज वातावरण निर्मित करने के लिए अध्ययनकर्त्ता द्वारा बच्चों की घर की भाषा (यह भाषा कुमांउनी है) में बातचीत की गयी।
- भाषा एवं गणित में बुनियादी दक्षता प्राप्त करने के लिए जरुरी है कि बच्चों के परिवेशीय अनुभवों को कक्षा में स्थान मिले और यह बच्चों की मौखिक भाषा के माध्यम से बेहतर तरीके से हो सकता है। मौखिक भाषा/मौखिकता (Oracy) को कक्षा में स्थान देने के लिए बच्चों से उद्देश्यपूर्ण बातचीत के अधिक से अधिक मौके/अवसर सृजित करने की जरुरत होती है। अवलोकन में इसका अभाव देखा गया। इसके दो प्रमुख कारण स्पष्ट रूप से दिखलायी देते हैं। पहला–आंगनबाड़ी केंद्र पर बच्चों को सीखने–सिखाने के अतिरिक्त बहुत से कार्य–दायित्वों का दवाब है, आंगनबाड़ी केंद्र के लाभार्थियों में 0–6 वर्ष के बच्चों के साथ–साथ, किशोरियां, गर्भवती एवं धात्री भी शामिल हैं। दूसरा–यह अनुमान किया जा सकता है कि कार्यकत्रियां बालशिक्षण हेतु उपयुक्त शिक्षणशास्त्र से परिचित/अभिमुखीकृत नहीं हैं।

- आंगनबाड़ी केन्द्रों में, बच्चों की शारीरिक विकास सम्बन्धी अभिलेख यथा–लम्बाई, वजन आदि अभिलेख उपलब्ध हैं परन्तु बच्चों की शैक्षिक प्रगति के आकलन के व्यवस्थित अभिलेख उपलब्ध नहीं हैं। बच्चों की अभ्यास पुस्तिका में किये गए काम को ही उनके सीखने के साक्ष्य के रूप में अधिकाँश आंगनबाड़ी केन्द्रों में दिखाया गया।
- आंगनबाड़ी केंद्र प्राथमिक विद्यालय से अलग 'एकल द्वीप' में काम करते नजर आते हैं, यह तथ्य सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्रों के बारे में भी सही है। इन दोनों एजेंसियों के मध्य अकादमिक सहयोग, विचार–विनिमय, समन्वय के कोई चिन्ह/साक्ष्य दिखलाई नहीं देते, जबकि आंगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों को आगामी भविष्य में प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 1 में प्रवेश लेना है, यह आश्चर्यजनक है।
- आंगनबाड़ी की दिनचर्या में बच्चों की माताओं/अभिभावकों से बच्चों की विगत दिनों की गैर–हाजिरी के बाबत बातचीत होती देखी गयी परन्तु बच्चे क्या कुछ सीख रहे हैं, इस बारे में बातचीत का अभाव नजर आया। इस संबंध में बच्चों की माताओं/अभिभावकों से बातचीत में, उनका कहना था 'हम तो बच्चों को पोषण एवं देखभाल के लिए यहाँ भेजते हैं, आगे उनको पढने के लिए प्राइवेट स्कूलों में भेज देंगे।' संभवतया, इसी कारण से आंगनबाड़ी कार्यकत्री/सहायक कार्यकत्री उदासीन प्रतीत होती हैं।

आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों/सहायक कार्यकत्रियों से साक्षात्कार

अध्ययन हेतु चयनित 10 आंगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यरत 8 कार्यकत्रियों तथा 10 सहायक कार्यकत्रियों से खुली साक्षात्कार प्रश्नावली के माध्यम से बातचीत की गयी। चयनित 10 आंगनबाड़ी केन्द्रों में से दो मिनी आंगनबाड़ी केंद्र (जीतनगर 2 एवं भागीरथी) हैं, जहाँ पर केवल सहायक कार्यकत्री नियुक्त हैं। साक्षात्कार प्रश्नावली के आधार पर बातचीत से निम्न प्रमुख तथ्य सामने आए–

- आंगनबाड़ी केंद्र की दिनचर्या में लाभार्थियों की स्वास्थ्य जांच, पोषाहार एवं तत्संबंधी अभिलेखों का रख–रखाव, उच्च स्तर को सूचना भेजना प्रमुख बताया गया, बच्चों को सीखने सिखाने के लिए समय की कमी बतलाई गयी। इस बात को प्रमुखता से रेखांकित किया गया '3 साल के बाद तो समर्थ अभिभावक अपने बच्चों को निजी विद्यालयों की नर्सरी कक्षा में दाखिला करा लेते हैं, इसके बाद गिने–चुने बच्चे ही केन्द्रों पर रह जाते हैं।' यह तथ्य आंगनबाड़ी केन्द्रों के अवलोकन में भी सामने आया।
- केवल 06 कार्यकत्रियों ने निपुण भारत मिशन के बारे में सुना है। इस मिशन के अंतर्गत वस्तुतः क्या किया जाना है? जिससे कि मिशन के लक्ष्य प्राप्त हो सकें? यह

बतलाने में असमर्थ रहीं। सभी 08 आंगनबाड़ी कार्यकत्रियां 12 अक्टूबर 2023 को वर्चुअल स्टूडियो के माध्यम से एक दिवसीय ऑनलाइन अभिमुखीकरण कार्यक्रम में शामिल होने का मौका मिला। सहायक कार्यकत्रियों को यह अवसर नहीं मिल पाया है। इस अभिमुखीकरण से निपुण भारत अभियान के बारे में उनकी समझ स्पष्ट नहीं हो सकी है। इसके अलावा इनका अन्य कोई प्रशिक्षण/अभिमुखीकरण नहीं हो पाया है।

- नर्सरी कक्षाओं को पढ़ाने–लिखाने सम्बन्धी किसी भी प्रकार का औपचारिक प्रशिक्षण इनको प्राप्त नहीं हुआ है। आंगनबाड़ी केंद्र पर कार्यकत्री/सहायक कार्यकत्री के रूप में नियुक्त होने के बाद विभागीय प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। यह प्रशिक्षण कार्य–दायित्वों के बारे में था, इसका एक छोटा सा भाग आंगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों की देखभाल और सीखने–सिखाने से सम्बंधित था।

- आंगनबाड़ी केन्द्रों की संभावित 'बाल वाटिका' भूमिका के बारे में 05 केन्द्रों को जानकारी है। इसमें उनकी क्या भूमिका है? बातचीत में, इस बारे में जानकारी/समझ की कमी महसूस हुई। 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सार्वभौमिक लक्ष्य' की समझ एवं इसके दृष्टिगत 'बाल–वाटिकाओं' की भूमिका के बारे में स्पष्टता का अभाव नजर आया।

- अलग–अलग विभागों से निर्देशों का अनुपालन, लक्ष्य की एकता एवं स्पष्टता में कमी, अभिभावकों से फीड बैक का अभाव, लाभार्थियों तक सुविधाएँ पहुँचाने में अधिक समय लगना आदि कारणों से बच्चों को पढ़ाने के लिए समय की कमी बतलायी गयी।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिगत आंगनबाड़ी केन्द्रों को नर्सरी कक्षाओं का संचालन करना है, इसमें 'बाल वाटिका' की भूमिका अहम् है। इसके लिए क्या किया जाना जरुरी है? इस प्रश्न पर लगभग सभी कार्यकत्रियों/सहायक कार्यकत्रियों का कहना था 'यदि हमसे नर्सरी स्तर की कक्षाओं को पढ़ाने की अपेक्षा की जा रही है तो सबसे पहले कार्यकत्री का टैग हटाया जाए तथा हमें नर्सरी शिक्षिका का दर्जा दिया जाना चाहिए।' राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी कहा गया है "5 वर्ष की आयु से कम उम्र का प्रत्येक बच्चा एक 'प्रीपेटरी कक्षा' या बाल वाटिका (जो कि कक्षा 1 से पहले है) में जाएगा, जिसमें एक योग्य ई.सी.सी.ई. शिक्षक होगा।"[12]

- बच्चों की माताओं/अभिभावकों से बच्चों की पढाई–लिखाई से सम्बंधित किसी भी प्रकार का सहयोग न मिलने की बात बतलाई गयी। इस संबंध में अभिभावकों से बातचीत करने पर यह बात सामने आयी कि माताएंध्अभिभावक किस प्रकार से सहयोग दे सकते हैं? 'इसकी न तो उनको जानकारी है और न ही इस बारे में आंगनबाड़ी केंद्र ने कभी बताया/बातचीत की।'

समेकन एवं सुझाव

बहुत छोटे प्रतिदर्श पर आधारित इस अध्ययन से प्राप्त अनुभव एवं अंतर्दृष्टि के आलोक में निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत करने का साहस किया जा सकता है–

- आंगनबाड़ी केन्द्रों को नर्सरी कक्षाओं के संचालन एवं 'बाल वाटिका' के माध्यम से प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 1 में सहज पारगमन में भूमिका निर्वहन करना है तो इन केन्द्रों को न केवल भौतिक रूप से साधन सम्पन्न करने की जरुरत है वरन अकादमिक क्षमता संवर्धन करने की भी नितान्त आवश्यकता है। आंगनबाड़ी केन्द्रों की भौतिक संसाधनों की कमी का अनुमान इस तथ्य से भी लगाया जा सकता है कि जिस दिन उत्तराखण्ड राज्य में चिन्हांकित 'आंगनबाड़ी केन्द्रों के 'बाल वाटिका' के रूप में कार्य करने की घोषणा की गयी, उसी समय प्रदेश में 3940 आंगनबाड़ी केन्द्रों में भवनों के जल्द निर्माण की भी घोषणा की गयी।[13]
- आंगनबाड़ी केंद्र भारत सरकार द्वारा वित्त–पोषित योजनान्तर्गत संचालित हैं। ये केंद्र, राज्य सरकार, विशेषकर विद्यालयी शिक्षा विभाग द्वारा समय–समय पर जारी निर्देशों का अनुपालन भी करती हैं परन्तु बहुत बार आदेश/दिर्देश की एकता के अभाव में भ्रम की स्थिति निर्मित होती है। इसके लिए इन केन्द्रों को पूर्णतः विद्यालयी शिक्षा विभाग के निर्देशन एवं नियंत्रण में लाया जाना चाहिए। इस बारे में नीतिगत निर्णय लेने की आवश्यकता होगी।
- आंगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यरत कार्यकत्रियों को नर्सरी शिक्षिका पद–नाम, पदस्थिति देने की जरुरत है। इसके साथ ही जरुरी प्रशिक्षण/अभिमुखीकरण करने की तत्काल आवश्यकता है। इनकी 'मल्टी–टास्किंग' भूमिका पर पुनर्विचार करने की जरुरत है। 0–6 आयुवर्ग के बच्चों के पोषण, सीखने–सिखाने से सम्बंधित कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों को किसी अन्य एजेंसी को देने के बारे में विचार किया जा सकता है।
- प्राथमिक विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों को अलग–अलग द्वीपों में काम करने के बजाय एक दूसरे से समन्वय, सहकार एवं सहयोग करते हुए काम करने की आवश्यकता है। दरअसल आंगनबाड़ी केन्द्र में नामांकित बच्चों को आगामी भविष्य में प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लेना है। यह सुझाया जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत प्रधान–अध्यापकों को कार्यकत्रियों/सहायक कार्यकत्रियों के मेंटर के रूप में नियुक्त करने पर विचार किया जा जाए, इससे आंगनबाड़ी केंद्र से निजी विद्यालयों की नर्सरी कक्षाओं में नामांकन की प्रवृत्ति पर कमी आ सकती है। वस्तुतः सरकारी प्राथमिक विद्यालय भी उत्तरोत्तर नामांकन में कमी की समस्या से जूझ रहे हैं।
- आंगनबाड़ी केंद्र की बदलती भूमिका के बारे में माताओं/अभिभावकों/समुदाय में

जन–जागरूकता एवं चेतना का प्रचार–प्रसार करने की तात्कालिक जरुरत है। अभी तक इन केन्द्रों के बारे में समुदाय में यह धारणा व्याप्त है 'ये केंद्र बच्चों की देखभाल एवं पोषण जरूरतों के लिए बने हैं।' कार्यकत्रियों का पद–नाम बदलकर नर्सरी शिक्षिका करने से नहुत सकारात्मक प्रभाव पढ़ सकता है। इससे समुदाय में यह सन्देश निःसंदेह प्रसारित होगा कि केंद्र बच्चों की नर्सरी कक्षाओं की पढाई–लिखाई के लिए सक्षम एवं जिम्मेदार है।

- वर्तमान में प्राथमिक शिक्षकों की सेवा–पूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षण जरूरतों को संबोधित करने के लिए जनपद में कार्यरत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अकादमिक रूप से सक्षम हैं परन्तु पूर्व–प्राथमिक/नर्सरी शिक्षकों की प्रशिक्षण जरूरतों को संबोधित करने में अकादमिक रूप से सक्षम नहीं हैं, अतः इस संसथान में कार्यरत फैकल्टी की क्षमता संवर्धन करने की तात्कालिक आवश्यकता है। ऑनलाइन प्रशिक्षणों, गूगल मीट के माध्यम से आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों की क्षमता संवर्धनं के बारे में संदेह है। बहुत जरुरी है कि नर्सरी कक्षाओं के शिक्षण हेतु जरुरी ज्ञान, कौशल एवं अभिवृति के विकास के लिए संस्थागत आधार पर औपचारिक प्रशिक्षण दिया जाए।
- 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' हेतु निर्धारित दक्षता स्तर के आधार पर बच्चों का आकलन करने पर इस बात का अंदेशा है कि इसे प्राप्त करने में असफल रहने पर बच्चों पर, इस प्रकार का लेबल लग जायेगा। बाद में, इंनके लिए कुछ अलग रणनीति पर पुनर्विचार किया जाए। इस प्रकार से टैग किये गए बच्चों पर विपरीत असर पढने की सम्भावना है, और अंतत यह, ऐसे बच्चों के शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल होने में अवरोध के रूप में ही परिलक्षित होगा।
- भले ही यह दावा किया गया है कि 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' का लक्ष्य सभी बच्चों को इसके दायरे में लाना है परन्तु प्रच्छन्न रूप से 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' की संकल्पना, मुख्यतः ग्रामीण पृष्ठभूमि के आर्थिक एवं सामाजिक रूप से अपवंचित वर्ग के बच्चों के लिए प्रतीत होती है। इस प्रकार से दो वर्ग स्पष्ट नजर आते हैं। पहला– ऐसा संभ्रांत वर्ग के बच्चे जिनको उच्च शुल्क वाले निजी विद्यालयों में समृद्ध वातावरण/सामग्री उपलब्द्ध है और दूसरा–ऐसे बच्चे जो आंगनबाड़ी केन्द्रों में नामांकित है। इस दूसरे वर्ग के बच्चों को समृद्ध वातावरण/सामग्री न मिल पाने के कारण, तुलनात्मक रूप से इनके पिछड़ने का खतरा है। अतः समाज के अपवंचित एवं विकल्पहीन बच्चों की पूर्व–प्राथमिक/नर्सरी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए, आंगनबाड़ी केन्द्रों को अकादमिक एवं भौतिक रूप से सक्षम एवं प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।
- बच्चों को प्राथमिक स्तर की प्रथम कक्षा 1 में प्रवेश करने के लिए केवल इस आधार पर नहीं रोका जाना चाहिए कि बच्चे ने 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' (एफ.

एल.एन.) का वांच्छित दक्षता स्तर प्राप्त नहीं किया है। अकादमिक शोध एवं अनुभव बताते हैं कि दक्षताएं किसी निर्धारित टाइम–फ्रेम में अर्जित नहीं की जा सकती वरन प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, रुचि–अभिरूचि, परिवेशीय वातावरण, माता–पिता/अभिभावकों की जागरूकता एवं संलग्नता, कक्षा का वातावरण, शिक्षक/शिक्षिका की अकादमिक क्षमता आदि कारको पर निर्भर करती है। दक्षताएं सतत रूप से अर्जित की जाती हैं और इनमें उत्तरोत्तर दृढ़ता आती जाती है। फाउंडेशनल स्टेज की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 रेखांकित करती है "फाउंडेशनल स्टेज को औपचारिक स्कूली शिक्षा की नींव स्थापित करने के रूप में भी देखा जाता है। सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास, जो औपचारिक स्कूलों के लिए उपयुक्त है, इस चरण के लिए एक और महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या का उद्देश्य बन जाता है।"[14]

- समुदाय में आंगनबाड़ी केंद्र को लेकर आम धारणा है कि ये केंद्र छोटे बच्चों, गर्भवती एवं धात्री महिलाओं को विशेष सुविधाएँ उपलब्द्ध कराने के लिए हैं और कार्यकत्रियों/सहायक कार्यकत्रियों की अहम् भूमिका यही है। इन केन्द्रों में पूर्व–स्कूली स्तर/नर्सरी कक्षाओं की पढाई–लिखाई का भी प्रावधान है, इस बारे में सजगता, जागरूकता एवं आग्रह का अभाव दिखलाई देता है। यह भी सही है कि कार्यों की अधिकता एवं विविधता के कारण आंगनबाड़ी केंद्र बच्चों के शिक्षण पर कम ध्यान दे पाते हैं। इस बात को फाउंडेशनल स्टेज की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 स्वीकार करते हुए रेखांकित करती है "आंगनबाड़ियों में शिक्षा के घटक पर ध्यान कई कारणों से अपर्याप्त रहा है, जैसे– उपलब्द्ध समय, शिक्षक की क्षमता। पढने से पहले की गतिविधियाँ, लिखने से पहले की गतिविधियां और संख्या–पूर्व अवधारणाओं से सम्बंधित गतिविधियाँ आमतौर पर आंगनबाड़ियों में बहुत कम होती हैं।"[15]
- 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' के लक्ष्य के दृष्टिगत आंगनबाड़ी केन्द्रों को आगामी वर्षों में अहम भूमिका का निर्वहन करना होगा। यह तब तक जारी रहने की सम्भावना है जब तक कि समाज के आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से अपवंचित वर्ग के सभी बच्चे भाषा एवं गणित की बुनियादी दक्षता के साथ औपचारिक कक्षा 1 में सुगमता एवं सहजता के साथ पारगमन करने में सक्षम न हो जाएँ। बहुत संभव है समयावधि निर्धारित वर्ष 2026–27 से भी आगे तक जाए। अतः आंगनबाड़ी केन्द्रों को तदर्थ आधार पर 'बाल–वाटिका'/नर्सरी शिक्षा केंद्र के रूप में निर्धारित कर देने से आगे, नीतिगत आधार पर, आंगनबाड़ी केन्द्रों को पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केंद्र/नर्सरी शिक्षा केंद्र के रूप में संस्थागत स्वरुप वदेने की जरुरत। किसी भी शैक्षिक संस्थान के बारे में समुदाय की धारणा, उस संस्था के विहित नाम के आधार पर भी बनती है। 'आंगनबाड़ी केंद्र' विहित नाम से आंगनबाड़ी केंद्र द्वारा पूर्व–प्राथमिक कक्षा/नर्सरी कक्षाओं के संचालन का आभास नहीं मिलता। एक यह वजह भी है कि आर्थिक रूप

से समर्थ अभिभावक अपने बच्चों का निजी विद्यालयों की नर्सरी कक्षाओं में दाखिला करने को तरजीह देते हैं। देर–सबेर आंगनबाड़ी केन्द्रों को नर्सरी शिक्षा/पूर्व–प्राथमिक शिक्षा देने वाले स्कूल का नाम देने की जरुरत होगी, इसी अनुरूप क्षमता संवर्धन की भी।

- 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान' की शब्दावली से यह सन्देश प्रसारित होता प्रतीत होता है कि किसी भी बच्चे को सर्वप्रथम इसे प्राप्त करना है, इसके बाद ही अन्य विषयगत दक्षताओं को प्राप्त करने की यात्रा की ओर बढ़ा जा सकता है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान बच्चे की शिक्षा की यात्रा के लिए एक साधन, मील का पत्थर हैं अंतिम लक्ष्य नहीं। अंतिम लक्ष्य तो कक्षा स्तर के अनुसार विषयों की अपेक्षित दक्षताएं प्राप्त करना है। लक्ष्य प्राप्ति के दवाब में साधन (बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान) के साध्य के रूप में निरुपित होने की सम्भावना प्रबल हो जाती है। विगत में अस्सी के दशक 'मिनिमम लेवल ऑफ लर्निंग' जैसी पहलों की निराशाजनक परिणामों से हम अवगत हैं। अतः बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को स्कूली शिक्षा प्रणाली की प्रक्रिया में सतत रूप से समाहित करने की जरुरत है न कि इसे एकांगी रूप से देखने की।

(7864 शब्द)

आभार

इस शोध आलेख को लिखने के लिए निरंतर मार्गदर्शन और अभिप्रेरण के लिए प्रो0 दीपक पालीवाल जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। इसके अभाव में यह अध्ययन कदाचित दुष्कर ही होता।

संलग्नक–01
आंगनबाड़ी केंद्र की अवलोकन तालिका

भौतिक संसाधन

1. उपलब्द्ध कक्ष एवं बैठने की जगह/गतिविधियों के लिए स्थान की पर्याप्तता
2. बच्चों के बैठने के लिए उपयुक्त फर्नीचर की उपलब्द्धता
3. खेलने का सुरक्षित स्थान/क्रीडांगन
4. आयु उपयुक्त खेल सामग्री/गतिविधि सामग्री
5. आयु उपयुक्त पठन सामग्री
6. पोषाहार निर्माण शाला/भोजन कक्ष
7. केंद्र तक पहुँचने का सुरक्षित रास्ता

8. बच्चों के साथ आने वाली माताओं/अभिभावकों के लिए बैठने/प्रतीक्षा की जगह

शिक्षण/अकादमिक प्रक्रियाएं

1. केंद्र में बच्चों की दैनिक चर्या
2. बच्चों के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया
3. बच्चों से अंतःक्रिया/बातचीत
4. दिनचर्या में खेल गतिविधियाँ/अन्य गतिविधियों का समन्वय
5. बच्चों के परिवेशीय अनुभवों/घर की भाषा को दिनचर्या में जगह
6. दिनचर्या में बच्चों की माताओं/अभिभावकों की सहभागिता
7. दिनचर्या में बच्चों की माताओं/अभिभावकों से फीड बैक लेने/फीड बैक देने की प्रक्रिया
8. बच्चों की प्रगति का आकलन का तरीका
9. बच्चों की सीखने की प्रगति सम्बन्धी साक्ष्यों/दस्तावेजों का रख–रखाव

संलग्नक–02
आंगनबाड़ी केंद्र में कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकत्री/सहायक कार्यकत्री साक्षात्कार प्रश्नावली

1. केंद्र में आपकी दिनचर्या क्या है?
2. दिनचर्या निर्वहन में आपके सम्मुख कौन–कौन सी समस्याएं आती हैं?
3. अपनी बहु–विध कार्य दायित्वों के निर्वहन के साथ–साथ बच्चों के सीखने–सिखाने के क्रम को सुचारू एवं सुव्यवस्थित रूप से किस प्रकार से संचालित करती हैं?
4. आपके विचार में 3 वर्ष की उम्र के बाद केंद्र में बच्चों के नामांकन में एकाएक कमी आने के क्या कारण हो सकते हैं?
5. क्या केंद्र में बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में बच्चों के माता–पिता/अभिभावकों से सहयोग/फीड बैक मिलता है? इस सहयोग/फीड बैक का उपयोग आप आप किस प्रकार से करती हैं?
6. आपने निपुण भारत मिशन के बारे में सुना है/जानती हैं
7. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सार्वभौमिक लक्ष्य को प्राप्त करने में यह किस प्रकार से मददगार हो सकता है?
8. आपने बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान सम्बन्धी अभिमुखीकरण/प्रशिक्षण प्राप्त

किया है? यदि हाँ तो इससे बच्चों के सीखने–सिखाने में क्या से बदलाव महसूस करती हैं?

9. यदि आपने इस तरह का कोई अभिमुखीकरण/प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है, तो आप इसकी जरुरत महसूस करती हैं, क्यों?
10. क्या आपने 'बाल वाटिका' के बारे में सुना है? आप जानती हैं? आपके केन्द्र को भविष्य में 'बाल वाटिका' की भूमिका का निर्वहन करना है, इसमें अपनी भूमिका को कैसे देखती हैं?
11. बाल वाटिका में भूमिका निर्वहन के लिए तैयारी के दृष्टिगत आपकी क्या–क्या अपेक्षाएं हैं?
12. आंगनबाड़ी केंद्र निर्धारित भूमिका बेहतर तरीके से निभा सकें इसके लिए क्या–क्या किया जाना चाहिए?–

साक्षात्कार प्रश्नावली की प्रश्न संख्या 10 एवं 11 उन्हीं आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से उपयोग में लायी गयी, जो प्राथमिक विद्यालय परिसर में अवस्थित एवं संचालित हैं। उत्तराखण्ड राज्य में इन आंगनबाड़ी केन्द्रों को संभावित (Potential) 'बाल वाटिका' के रूप में देखा जा रहा है।

संलग्नक–03

निपुण भारत अभियान तालिका–भाषा (बाल वाटिका)

विषय	दक्षताएं	बालक/बालिका का दक्षता स्तर'
मौखिक भाषा	1. दोस्तों और शिक्षकों से बात करना।	
	2. समझ के साथ तुकांत/कविताएं गाना।	
पढ़ना	3. किताबों को देखना और चित्रों की मदद से कहानी पढ़ने का प्रयास करना।	
	4. कुछ परिचित दोहराए गए शब्दों को पहचानने और इंगित करने की शुरुआत करना (दृष्टि शब्दों या खाद्य कंटेनर/रैपर पर छपे शब्द)।	
	5. अक्षरों एवं संगत द्वानियों को पहचानना।	
	6. कम से कम दो अक्षरों वाले सरल शब्दों को पढ़ना।	
लेखन	7. खेल के दौरान पहचान वाले अक्षरों को लिखने का प्रयास करना।	

8. आत्म अभिव्यक्ति के लिए पेंसिल घसीटना या चित्र बनाना।
9. पेंसिल को ठीक से पकड़ना और पहचानने योग्य अक्षर बनाने के लिए उपयोग करना।
10. अपने नाम के पहले शब्द को पहचानना

संलग्नक–04

निपुण भारत अभियान तालिका–गणित (बाल वाटिका)

विषय	दक्षताएं	बालक/बालिका का दक्षता स्तर
संख्यात्मक	1. वस्तुओं की गिनती और 10 तक संख्याओं से सह–संबंध स्थापित करना। 2. 10 तक के अंकों को पहचानना और पढ़ना। 3. वस्तुओं की संख्या के संदर्भ में दो समूहों की तुलना करना और अधिक/कम/बराबर आदि जैसे शब्दों का उपयोग करना। 4. एक क्रम में घटनाओं की संख्या/वस्तुओं/आकृतियों/घटनाओं को व्यवस्थित करना। 5. वस्तुओं को उनकी अवलोकनीय विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करना और वर्गीकरण के मानदंड का संचार करना। 6. अपने आसपास की विभिन्न वस्तुओं के संदर्भ में तुलनात्मक शब्दों का उपयोग करना, जैसे–लंबे, सबसे लंबे, सबसे छोटे से अधिक, हल्के आदि।	

संलग्नक–05

अध्ययन में सम्मिलित आंगनबाड़ी केन्द्र एवं नामांकित लाभार्थी

क्र.सं.	आंगनबाड़ी का नाम	पंजीकृत बच्चे 0–3 वर्ष		पंजीकृत बच्चे 0–3 वर्ष				स्कूल परिसर में संचालित हैं/नहीं हैं	पूर्णधमिनी आंगनबाड़ी	गर्भवती	धात्री
		बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग				
1.	मण्डलसेरा 1	28	32	60	00	00	00	नहीं है	पूर्ण	07	06
2.	मण्डलसेरा 2	22	17	39	05	05	10	है	पूर्ण	03	07
3.	मण्डलसेरा 3	16	18	34	05	04	09	नहीं है	पूर्ण	05	06
4.	मल्ला बानरी	04	11	15	01	05	06	है	पूर्ण	02	02
5.	जीतनगर 1	36	19	55	03	01	04	नहीं है	पूर्ण	03	08
6.	जीतनगर 2	15	16	31	03	01	04	नहीं है	मिनी	02	04
7.	भागीरथी	14	14	28	02	02	04	नहीं है	मिनी	01	00
8.	गाड़गाँव	03	03	06	04	02	06	है	पूर्ण	02	01
9.	फल्टनियां	10	05	15	01	01	02	नहीं है	पूर्ण	00	03
10.	घिरोली	11	16	27	00	00	00	है	पूर्ण	03	05
		149	151	300	24	21	45			28	42

श्रोतः जिला महिला एवं बाल विकास परियोजना कार्यालय, जनपद बागेश्वर, उत्तराखण्ड. 30 सितम्बर 2023.

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति (2022), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज 2022, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ–18.
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति (2022), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज 2022, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ–15.
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (2019), पूर्व प्राथमिक पाठ्यचर्या 2019, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ–1.
4. स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2021), राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन, निपुण भारत, राष्ट्रीय साक्षारता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत) 2021, पृष्ठ 16.
5. वही।
6. सिंह, राकेश कु0. एवं छेत्री, नेहा. (2014), आंगनबाड़ी कार्यक्रमः एक प्रवेशिका, अनुवाद–राकेश कु0 सिंह, न्यू एजुकेशन ग्रुप–फाउंडेशन फॉर इनोवेशन एंड रिसर्च इन एजुकेशन (एन.ई.जी,–फायर), अक्टूबर 2014, पृष्ठ 2–3.
7. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (2022), विद्या प्रवेशः कक्षा 1 के बच्चों के लिए तीन माह के खेल आधारित 'स्कूल तैयारी मॉडयूल' हेतु दिशा निर्देश 2022, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ 6.
8. वही पृष्ठ 11.
9. स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2021), राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन, निपुण भारत, राष्ट्रीय साक्षारता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत) 2021, पृष्ठ 7.
10. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति (2022), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज 2022, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ–27.
11. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 2020, पृष्ठ–11.
12. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पैरा 1.6, पृष्ठ 10.
13. दी टॉप टेन न्यूज, देहरादून, 6 अक्टूबर 2023.
14. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति (2022), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज 2022, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली, 110016, पृष्ठ–54.
15. वही, पृष्ठ–30.